

रॉबर्ट वानॉय , निर्वासन से निर्वासन, व्याख्यान 5बी

लैव्यवस्था और संख्याएँ

6. तम्बू स्थापित है - निर्गमन 40

इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, मैं स्लाइड 32 पर एक बुलेट पॉइंट से चूक गया, वह कथन, "टाइपोलॉजी रूपक के बजाय इतिहास के दृष्टिकोण से बाइबिल की एकता को समझने का एक प्रयास है।" उस आरेख को याद करें जो मेरे पास मुक्तिदायी इतिहास के विकास की रेखा पर था, और वही सत्य इतिहास को एक साथ बांधने वाली उस रेखा के विभिन्न बिंदुओं पर फिर से प्रकट होता है।

अगला शीर्षक 6 है, "तम्बू स्थापित किया गया है - निर्गमन 40।" याद रखें कि हमने अपनी चर्चा की शुरुआत में पुस्तक की मूल संरचना के बारे में बात की थी, जैसे कि लिबरेशन या एक्सोडस, माउंट सिनाई, और फिर टैबरनेकल - एक्सोडस की पुस्तक में तीन आंदोलन। अध्याय 40 में हम चरमोत्कर्ष पर पहुँचते हैं। आपने अध्याय 40 श्लोक 17 में पढ़ा, "इस प्रकार वह तम्बू दूसरे वर्ष के पहिले महीने के पहिले दिन को खड़ा किया गया।" फिर श्लोक 20 में, "उसने गवाही ली और सन्दूक में रख दी।" गवाही दस आज्ञाएँ हैं, पत्थर की वे पटियाएँ। "तब उस ने सन्दूक को तम्बू में पहुँचाया, और ढाल के सन्दूक को लटकाया, और यहोवा की आज्ञा के अनुसार साक्षीपत्र के सन्दूक की रक्षा की।" और आप पद 34 में पढ़ते हैं, "तब बादल ने मिलापवाले तम्बू को ढक लिया, और यहोवा का तेज तम्बू में भर गया। मूसा मिलापवाले तम्बू में प्रवेश न कर सका, क्योंकि बादल उस पर छा गया, और यहोवा का तेज तम्बू में भर गया।

जब हम तम्बू के निर्माण के निर्देशों को देखते हैं, तो उद्धरणों के पृष्ठ 31, 32 पर जेए मोटयेर का एक उद्धरण होता है। वह कहते हैं, "यह चरमोत्कर्ष है।" याद रखें वह कहता है, "परमेश्वर तम्बू में रहने के लिए आया था। परमेश्वर अपने लोगों के बीच में निवास कर रहा था। यह निर्गमन की पुस्तक में मुक्ति की प्रगति का चरमोत्कर्ष है।

7. लैव्यवस्था की पुस्तक ए. नाम उन टिप्पणियों के साथ फिर हम आपकी रूपरेखा में

नंबर 7 पर आगे बढ़ते हैं, “लैव्यव्यवस्था की पुस्तक।” हम लेवितिकस पर बहुत अधिक समय खर्च नहीं करने जा रहे हैं, क्योंकि यह कानूनी सामग्री है। 7 के अंतर्गत दो उप-बिंदुओं पर ध्यान दें: ए "नाम" है, बी "सामग्री पर सामान्य टिप्पणियाँ" है। जहां तक नाम का सवाल है, याद रखें मैंने कहा था कि यहूदी परंपरा में नाम किताब की पहली पंक्ति के पहले शब्दों से लिया जाता है। लैव्यव्यवस्था 1:1 में यह "वेइक्रा" होता है, "और उसने बुलाया।" तो यहूदी परंपरा में, शीर्षक है "और उसने बुलाया," (*वेइक्रा*)। जिस शीर्षक से हम परिचित हैं, लेवितिकस, लैटिन वुल्गेट से आया है। आप "लैवितिकस" शब्द में लैटिन रूप देख सकते हैं। इसका वास्तव में अर्थ है "एक लेवीय पुस्तक," एक पुस्तक जो लेवियों, विशेष रूप से याजकों और उनके कर्तव्यों के काम से संबंधित है। मुझे लगता है कि हम उस वुल्गेट शीर्षक से बेहतर हैं जो यहूदी परंपरा में शीर्षक की तुलना में पुस्तक की सामग्री के बारे में कुछ कहता है, क्योंकि लैव्यिकस इस प्रकार अनुष्ठान, पुजारियों के कर्तव्यों, लेवियों के कर्तव्यों, प्रकार पर पुस्तक के जोर को दर्शाता है। बलिदान, त्यौहार, आदि।

बी। सामग्री पर सामान्य टिप्पणियाँ

बिंदु बी, "सामग्री पर सामान्य टिप्पणियाँ।" यह ग्रन्थ मुख्यतः कर्मकाण्ड विधान है। उसके लिए ऐतिहासिक रूपरेखा अभी भी माउंट सिनाई पर इज़राइल है। आपने देखा कि कैसे पहला पद इस प्रकार शुरू होता है "प्रभु ने मूसा को मिलापवाले तम्बू में से बुलाया।" इस प्रकार सिनाई में इस्राएल को उस उद्देश्य के लिए सुसज्जित किया जा रहा है जिसके लिए प्रभु ने उन्हें एक राष्ट्र बनाया था। वह उद्देश्य निर्गमन 19:6 में दिया गया है, जहाँ प्रभु ने कहा, "तुम मेरे लिये याजकों का राज्य, और पवित्र जाति ठहरोगे।" इसराइल को अन्य सभी देशों से अलग किया जाना है। तब इज़राइल को राष्ट्रों के बीच एक पुरोहिती कार्य करना है - एक मध्यस्थ कार्य। परमेश्वर ने पहले ही इस्राएल को कानूनी सामग्री के कई कानूनी खंड दे दिए थे। सबसे पहले आपके पास मूलभूत कानून, दस आज्ञाएँ हैं, फिर आपके पास वाचा की पुस्तक, निर्गमन 20 से 23 है। फिर वह उस पहाड़ पर वापस चला गया जहाँ वह 40 दिनों के लिए था। फिर आपके पास तम्बू के निर्माण से संबंधित सभी नियम हैं, निर्गमन 27 से 31

और 36 से 40। निर्गमन के अंत में तम्बू स्थापित किया गया है, और अब लेविटिकस में, आपके पास अतिरिक्त, विस्तृत निर्देश हैं जो वर्णन करते हैं कि एक पापी लोग कैसे हैं एक पवित्र ईश्वर के पास जा सकते हैं , और स्वीकृति का आश्वासन दिया जा सकता है। मुझे लगता है कि पुस्तक का

मूल जोर इसी पर है : कैसे पापी लोग पवित्र ईश्वर के पास जा सकते हैं और स्वीकृति के प्रति आश्वस्त हो सकते हैं। 1) मुख्य श्लोक: लेव। 17:11 - स्थानापन्न प्रायश्चित्त लैव्यिकस का मुख्य पद अध्याय 17 श्लोक 11 है, जो कहता है, "क्योंकि प्राणी का जीवन खून में है। मैं इसे तुम लोगों को वेदी पर प्रायश्चित्त करने के लिये दे रहा हूँ। यह वह खून है जो किसी के जीवन का प्रायश्चित्त करता है।" इसलिए पुस्तक का मूल विचार प्रतिस्थापनात्मक प्रायश्चित्त है जो रक्त बलिदान के माध्यम से प्रदान किया जाता है। पुस्तक की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह पुजारियों के कर्तव्यों को नियंत्रित करती है। पुजारी भगवान और उसके लोगों के बीच आवश्यक मध्यस्थ हैं। पुस्तक का चरित्र लैव्यव्यवस्था 20:26 में जीवंत हो उठता है, जहाँ आप पढ़ते हैं, "तुम मेरे लिये पवित्र बनो, क्योंकि मैं प्रभु पवित्र हूँ। और मैं ने तुम्हें अन्यजातियों से अलग करके अपना बना लिया है।" तो यह प्रभु की पवित्रता के बारे में एक किताब है। यहोवा पवित्र है और वह चाहता है कि उसकी प्रजा पवित्र रहे; उसके लोगों को अन्य सभी लोगों से अलग किया जाएगा।

2) कानून के प्रकार हम कानून के प्रकार देख सकते हैं। मैं संक्षेप में सामग्री की 5 अलग-अलग श्रेणियों के बारे में बताने जा रहा हूँ। सबसे पहले, आपके पास ऐसी परिस्थितियाँ हैं जिनके तहत पापी बलिदान दे सकता है और उसे बलिदान देना भी चाहिए। दूसरे, आपके पास उस प्रकार के बलिदान हैं जो उसे लाने चाहिए और उन्हें कैसे चढ़ाया जाना चाहिए इसके बारे में निर्देश हैं। तीसरे, पुजारियों की योग्यता और कर्तव्यों का वर्णन किया गया है; और चौथा, यौन शुद्धता से संबंधित विस्तृत कानून दिए गए हैं। यह शिक्षण कामुकता के क्षेत्र में कनानी प्रथाओं की पृष्ठभूमि पर आधारित होना चाहिए। आप इसे विशेष रूप से

लेवितिकस अध्याय 18 और अध्याय 20 में पाते हैं, जहां आपके पास इस्राएलियों के लिए निषिद्ध चीजों का विस्तृत विवरण है जिन्हें प्रभु के लिए घृणित कहा जाता है। जैसा कनानी लोग करते हैं वैसा मत करो। फिर पाँचवाँ, अनुष्ठान की शुद्धता और अशुद्धता से संबंधित कानून। जैसे, मृत शरीर, कुष्ठ रोग, जानवरों आदि से संपर्क न करना।

तो यह उस प्रकार की चीज़ें हैं जिनका विधान आपको लेवितिकस की पुस्तक में मिलता है। यह प्राचीन इस्राएलियों के लिए अत्यधिक महत्व की पुस्तक है, क्योंकि यह उन चीज़ों से संबंधित है जिनका सामना इस्राएलियों को अपने जीवन में हर दिन करना पड़ता था। दूसरे शब्दों में, यदि वे अपना दैनिक व्यवसाय करते, तो उन्हें उन प्रकार के मुद्दों का सामना करना पड़ता जिनके बारे में इन कानूनों में बात की गई है। अब हमारे लिए, मुझे लगता है कि यह पुस्तक बिल्कुल अलग महत्व रखती है, क्योंकि हम पुराने नियम की अर्थव्यवस्था के तहत नहीं रहते हैं। ये अनुष्ठान कानून फिर से विशिष्ट महत्व के हैं, जो मसीह की ओर इशारा करते हैं और मसीह में पूर्णता और पूर्णता पाते हैं। हिब्रू की किताब कहती है, "बैल और बकरो का बलिदान अंततः पाप को दूर नहीं कर सका।" यह केवल मसीह के बलिदान के द्वारा ही था जो मसीह के आने पर पूरा होगा। वह अंतिम बलिदान था। वह सब पुराने नियम के इन अनुष्ठानों में पूर्वनिर्धारित और पूर्वाभासित किया गया है जो मसीह में पूरे हुए थे। ये नियम अब नई वाचा में दिन-प्रतिदिन के आधार पर बाध्यकारी नहीं हैं। इसलिए हमारे लिए, मुझे लगता है कि इसका अर्थ प्राचीन इस्राएलियों की तुलना में काफी अलग आकार लेता है। मुझे लगता है कि सबसे पहले आप इन कानूनों में बाइबल के बाकी हिस्सों में बलि चढ़ाने, शुद्धिकरण के समारोहों, विश्राम वर्ष, जुबली के वर्ष जैसी संस्थाओं के संदर्भ को समझने की पृष्ठभूमि देखते हैं; उनमें से कुछ पुराने नियम में, कुछ नए नियम में। इसलिए यदि आप इस प्रकार के संदर्भों को समझना चाहते हैं, तो आप पाएंगे कि ऐसी चीज़ों का वर्णन लेवितिकस की पुस्तक में है।

दूसरे, आप मसीह को पुराने नियम में एक विशिष्ट तरीके से देखते हैं। ये सभी अनुष्ठान ईसा मसीह की ओर संकेत करते हैं। यह प्रायश्चित, पवित्रीकरण और अभिषेक की पुस्तक है और इसका महत्व है।

तीसरा, यह धर्मों के सामान्य इतिहास के दृष्टिकोण से दिलचस्प है, जहां आप इज़राइल की पूजा की तुलना अन्य प्राचीन लोगों की पूजा से कर सकते हैं। यह धार्मिक से ज्यादा ऐतिहासिक चीज़ है। इस्राएल ने कैसे आराधना की? कनानियों ने कैसे पूजा की? वह इसे धर्म के इतिहास के दृष्टिकोण से देख रहा है। लैव्यिकस इस बारे में बहुत सी जानकारी देता है कि पुराने नियम के काल में इस्राएल किस प्रकार पूजा करता था।

अंत में, जहां तक रूढ़िवादी यहूदियों का सवाल है, वहां आपका अर्थ कुछ हद तक वैसा ही है जैसा कि पुराने टेस्ट में था, चाहे वह मंदिर में दैनिक बलिदान हो, इसका अधिकांश संबंध आहार कानूनों और सब्बाथ से है। एक टिप्पणीकार ने कहा, जब उनसे पूछा गया कि पेंटाटेच में वे किस पुस्तक का अध्ययन करना सबसे अधिक पसंद करते हैं, तो गैर-यहूदी पृष्ठभूमि के लोग उत्पत्ति को चुनेंगे; जबकि अधिकांश रूढ़िवादी यहूदी शायद लेविटिकस कहेंगे, क्योंकि लेविटिकस में हमेशा ऐसी सामग्री होती है जो आज भी उनके जीवन को नियंत्रित करती है।

8. बलिदान के संबंध में कानून - लैव्यव्यवस्था 1-7

9. पुजारियों का अभिषेक - लैव्यव्यवस्था 8-9

10. नादाब और अबीहू का विद्रोह - लैव्यव्यवस्था 10 उन सामान्य टिप्पणियों के अलावा, अपनी रूपरेखा संख्या 8 पर ध्यान दें, "बलिदान के संबंध में कानून - लैव्यव्यवस्था 1-7," मैं नहीं जा रहा हूँ उस सामग्री को देखने के लिए, लेकिन यहीं आपको बलिदान के बारे में अधिक जानकारी मिलती है। संख्या 9, "याजकों का अभिषेक - लैव्यव्यवस्था 8-9।" मैं उस पर भी कोई टिप्पणी नहीं करने जा रहा हूँ। लेकिन 10, "नादाब और अबीहू का विद्रोह - लेविटिकस 10," मैं कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ। लैव्यव्यवस्था 10 ऐतिहासिक है। यह नादाब और अबीहू का विद्रोह है, और जिस तरह से प्रभु इससे निपटते हैं। यह पुस्तक के कुछ कथात्मक खंडों में से एक है। और तुम पहली आयत में पढ़ते हो, "नादाब और अबीहू के पुत्र हारून ने अपने धूपदान लेकर उनमें आग डाली, और धूप डाला; और उन्होंने यहोवा की आज्ञा के विपरीत, उसके साम्हने अनधिकृत आग चढ़ा दी। तब यहोवा के साम्हने से

आग निकलकर उनको भस्म कर गई, और वे यहोवा के साम्हने मर गए। तब मूसा ने हारून से कहा, 'यह वही है जो यहोवा ने कहा था जब उसने कहा था: "जो मेरे पास आएंगे उनके बीच मैं अपने आप को पवित्र दिखाऊंगा, सभी लोगों की दृष्टि में मेरा सम्मान किया जाएगा।"' हारून चुप रहा। मूसा ने हारून के चाचा उज्जीएल के पुत्र मीशाएल और एल्सापान को बुलाकर उन से कहा, 'इधर आओ; अपने चचेरे भाइयों को छावनी के बाहर, पवित्रस्थान के साम्हने से दूर ले जाओ।' इसलिये वे आये और मूसा की आज्ञा के अनुसार उनको अंगरखे ही समेत छावनी के बाहर ले गए। तब मूसा ने हारून और उसके पुत्र एलीआजर और ईतामार से कहा, 'अपने बाल बिखरे न रहना, और अपने वस्त्र न फाड़ना, ऐसा न हो कि तुम मर जाओ, और यहोवा सारी मण्डली पर क्रोधित हो।' पद 8 में नीचे, "तब यहोवा ने हारून से कहा, 'जब कभी तू और तेरे पुत्र मिलापवाले तम्बू में जाएं तो दाखमधु या कोई अन्य किण्वित पेय न पीना, नहीं तो तू मर जाएगा। यह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्थायी अध्यादेश है।'"

तो यहाँ नादाब और अबीहू की कहानी है जिन्होंने भगवान के सामने अनधिकृत आग के रूप में जो वर्णित किया गया है उसे अर्पित किया। वास्तव में वह क्या है, इसका आगे वर्णन नहीं किया गया है। यह जानना कठिन है कि अपराध क्या था। कुछ लोगों का सुझाव है कि जो कोयले उनके धूपदान में रखे गए थे, वे होमबलि की वेदी से नहीं लिए गए थे। यदि आप अध्याय 9 के अंतिम छंदों तक जाते हैं, तो आप श्लोक 24 में मूसा और हारून द्वारा याजकों को अलग करने के संबंध में पढ़ते हैं, "यहोवा ने सब लोगों को दर्शन दिया; यहोवा के सामने से आग निकली और होमबलि और वेदी की चर्बी को भस्म कर दिया।" दूसरे शब्दों में, वह वेदी, पिछले अध्याय के अंत में, दिव्य अग्नि से जलाई गई थी, ऐसा कहा जा सकता है, कि वह भगवान से आई थी। क्या नादाब और अबीहू ने होमबलि की वेदी के बजाय कोयले का कोई अन्य स्रोत लिया था? यदि आप लेवितिकस 16 में जाते हैं, जहां आप प्रायश्चित के दिन की चर्चा करते हैं, और श्लोक 12 को देखते हैं, तो यह कहता है, "हारून को प्रभु के सामने से वेदी से जलते हुए कोयले और दो मुट्ठी बारीक कोयले लेने हैं।" ज़मीनी धूप।" तो यह आग का स्रोत हो सकता है।

अन्य लोग सोचते हैं कि इसका संबंध धूप से है। यह कहता है कि उन्होंने धूप मिलायी, और फिर निर्गमन 30:34-38 पर वापस जाते हैं, धूप बनाने के निर्देश। इसलिए शायद उन्होंने इसके लिए निर्देशों का पालन नहीं किया। लेकिन जो कुछ भी था, निर्धारित नियमों का कुछ हद तक लापरवाही से या जानबूझकर उल्लंघन किया गया था, और उसके कारण नादाब और अबीहू आग से झुलस गए थे।

कुछ लोग यह भी सुझाव देते हैं कि इसमें नशे की लत भी शामिल हो सकती है, क्योंकि श्लोक 8 और 9 में यह कहा गया है, "जब भी तुम और तुम्हारे बेटे मिलापवाले तम्बू में जाएँ तो तुम्हें दाखमधु या कोई अन्य किण्वित पेय न पीना चाहिए, नहीं तो तुम मर जाओगे।" क्या नादाब और अबीहू नशे में थे? क्या नशा करना मुद्दा था? लेकिन जो भी था, यह एक कठोर दंड था।

हो सकता है कि वह इज़राइल के अनुष्ठान की शुरुआत में नादाब और अबीहू का उदाहरण दे रहा हो। वह शुरुआत महत्वपूर्ण है ताकि पूजा उचित आधार पर स्थापित हो, और एक उदाहरण बने ताकि नियमों का पालन किया जा सके। मुझे लगता है कि नादाब और अबीहू के साथ जो हुआ उसमें कुछ समानता है और प्रेरितों के काम अध्याय 5 में अनन्या और सफीरा के साथ जो हुआ, उन्होंने अपने द्वारा लाए गए प्रसाद को गलत बताया और वे त्रस्त हो गए और बाहर ले गए। निश्चित रूप से बाद में अन्य लोगों ने अनन्या और सफीरा या नादाब और अबीहू की तुलना में उतना ही बुरा या बुरा काम किया, और फिर भी उन्होंने इसके लिए अपने जीवन का भुगतान नहीं किया जैसा कि इन लोगों ने किया था। लेकिन भगवान फिर से नियमों के पालन के महत्व को स्पष्ट और सशक्त तरीके से रेखांकित कर रहे हैं; इज़राइल ईश्वर के अनुबंधित लोगों के रूप में अपना अस्तित्व शुरू कर रहा है। तो यह 10 पर कुछ टिप्पणियाँ हैं, "नादाब और अबीहू का विद्रोह।"

11. अन्य कानून - लैव्यव्यवस्था 11-27

संख्या 11 बस एक कैच-ऑल की तरह है, "अन्य कानून - लैव्यव्यवस्था 11-27।" आप त्योहारों पर ध्यान देते हैं, जिसमें लैव्यव्यवस्था 16 में प्रायश्चित का दिन भी शामिल है;

और वह सभी कानूनी सामग्री, निश्चित रूप से अध्याय 16 एक महत्वपूर्ण अध्याय है, जहां हर साल आप प्रायश्चित्त दिवस का पालन करते हैं। और उस दिन महायाजक ने अपने, और अपने घराने, और इस्राएल की सारी मण्डली के लिये प्रायश्चित्त किया। और यह वार्षिक कैलेंडर का एक महत्वपूर्ण दिन था।

अध्याय 16 के अलावा, आप वहां अध्याय 23 भी जोड़ सकते हैं, क्योंकि 23 में, आपके पास मनाए जाने वाले तीन प्रमुख वार्षिक त्योहारों का संदर्भ है। आपने देखा लैव्यव्यवस्था 23:4-8 में, फसह और अखमीरी रोटी की चर्चा है। पद 6, "महीने के पंद्रहवें दिन को प्रभु का अखमीरी रोटी का पर्व आरम्भ होता है।" श्लोक 7, पहले दिन एक गंभीर सभा थी, और श्लोक 5, महीने के चौदहवें दिन गोधूलि के समय प्रभु का फसह शुरू होता है और महीने के पंद्रहवें दिन अखमीरी रोटी का पर्व होता है। तो फसह और अखमीरी रोटी का पर्व पद 4 से 8 में हैं।

फिर लैव्यव्यवस्था 23:15-22 में सप्ताहों का पर्व है। नये नियम में इसे पेंटेकोस्ट कहा गया है। इसलिए, "विश्रामदिन के अगले दिन से, जिस दिन तुम हिलाई हुई भेंट का पूला ले आए, पूरे सात सप्ताह गिनना। सातवें सप्ताह के अगले दिन तक पचास दिन गिनें [यहीं पर आपको "पेंटेकोस्ट" या 50 का शीर्षक मिलता है," और सप्ताहों के उस पर्व का विवरण। फिर लैव्यव्यवस्था 23:33-43 में झोपड़ियों का पर्व है। यह प्रायश्चित्त के दिन के ठीक बाद आता है। तो वे तीन त्योहार, फसह, सप्ताहों का पर्व, और झोपड़ियों का पर्व वार्षिक त्योहार थे जो इस्राएल के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण हो गए।

12. सिनाई छोड़ने की तैयारी - संख्या 1:1-10:10 ए. संख्याओं की पुस्तक

1) नाम

यह हमें 12 पर लाता है, "सिनाई छोड़ने की तैयारी - संख्या 1:1-10:10।" अक्षर a है, "संख्याओं की पुस्तक।" और फिर, उसके अंतर्गत दो उप-बिंदु हैं, 1), "नाम," और 2), "सामग्री।"

सबसे पहले, जहां तक नाम का सवाल है, हिब्रू परंपरा में, नाम *बेमिडबार* है,

जिसका अर्थ है "जंगल में।" यह पहली कविता से आता है, "प्रभु ने सिनाई के रेगिस्तान में मूसा से बात की।" रेगिस्तान में, *बेमिडबार* है। इस मामले में, यह हिब्रू पाठ में पाँचवाँ शब्द है। अंग्रेजी नाम, "नंबर्स", सेप्टुआजेंट, ग्रीक *अरिथमोई से आया है*, और फिर हमारी अंग्रेजी परंपरा में चला गया है। *अरिथमोई* का अनुवाद "संख्याएँ" है। अब, इस मामले में, मुझे लगता है कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि पुस्तक का शीर्षक हिब्रू परंपरा, "जंगल में" से नहीं है, क्योंकि "जंगल में" इसकी सामग्री के बारे में अधिक वर्णन करता है। पुस्तक का शीर्षक, "संख्याएँ" है। जब आप शीर्षक "संख्याएँ" पढ़ते हैं और फिर आप पहला अध्याय शुरू करते हैं, और आपके पास ये सभी जनगणनाएँ चौथे अध्याय तक होती हैं। फिर अध्याय 26 में, पुस्तक के अंत में, आपके पास जनगणना लेने का एक और अध्याय होता है। लेकिन वह है केवल पाँच अध्याय। जहाँ तक पुस्तक के प्रतिशत की बात है, 90 प्रतिशत पुस्तक का संख्याओं या जनगणना से कोई लेना-देना नहीं है। इसलिए मुझे लगता है कि शीर्षक "जंगल में" शायद लोगों की मदद करेगा, उन्हें पुस्तक पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करेगा, शीर्षक से कहीं अधिक जिससे हम परिचित हैं।

2) संख्याओं की सामग्री

क) कालक्रम जहाँ तक सामग्री का सवाल है, मुझे लगता है कि सामग्री पर नियंत्रण पाने का तरीका पुस्तक की कालानुक्रमिक संरचना को देखना है। पुस्तक 38 वर्षों की अवधि को कवर करती है। इज़राइल दो साल सिनाई में था, और फिर 38 साल जंगल में था। संख्या 1:1 की तुलना व्यवस्थाविवरण 1:3 से करने पर हमें यह पता चलता है। आप संख्या 1:1 को देखें, जहाँ यह कहा गया है, "इस्राएलियों के मिस्र से निकलने के बाद दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के पहले दिन को यहोवा ने सीनै के जंगल में मिलापवाले तम्बू में मूसा से बातें कीं।" पहला दिन, दूसरा महीना, दूसरा वर्ष। और आप व्यवस्थाविवरण 1:3 को देखते हैं और आप पढ़ते हैं, "चालीसवें वर्ष में, ग्यारहवें महीने के पहले दिन को, मूसा ने इस्राएलियों को वह सारी बातें बतायीं जो यहोवा ने उसे दी थीं।" तो संख्याओं की पुस्तक 38 वर्ष की अवधि है।

इस्राएली लगभग 2 वर्ष तक सीनै पर्वत पर छावनी में रहे। आप इसे निर्गमन 19:1 से

प्राप्त करते हैं जो कहता है, "इज़राइल के मिस्र छोड़ने के बाद तीसरे महीने में, वे सिनाई पहुंचे।" फिर गिनती 10:11, "दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के बीसवें दिन को बादल साक्षी के तम्बू के ऊपर से उठ गया," और यहीं से इस्राएल ने सीनै पर्वत को छोड़ा। इस प्रकार वे निर्गमन के तीसरे महीने से लेकर निर्गमन के दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के बीसवें दिन तक सिनाई में रहे। तो आपने देखा कि इसका मतलब यह है कि संख्या 1:1 से 10:10 तक 19 दिनों की अवधि शामिल है। दूसरे शब्दों में, संख्या 1:1, यदि आप 1:1 में उस पूर्ववर्ती पाठ पर वापस जाते हैं, तो दूसरे वर्ष के दूसरे महीने का पहला दिन; गिनती 10:11: दूसरे वर्ष के दूसरे महीने का बीसवां दिन. संख्या 1:1 से 10:11 वे अंतिम 19 दिन थे जब इस्राएल सिनाई पर्वत पर रहा। यह मूल रूप से पहले दस अध्याय हैं, जनगणना, और इसके कुछ भाग के लिए वे सिनाई छोड़ने के लिए खुद को संगठित कर रहे थे।

वे सिनाई छोड़ देते हैं, अगली महत्वपूर्ण घटना संख्या 13:14 में वर्णित है, जहां वे कादेश बरनिया पहुंचते हैं, जो कि कनान देश में सबसे दक्षिणी प्रवेश द्वार है, आप कह सकते हैं। वहाँ उन्होंने कादेशबर्ने से कनान देश में जासूस भेजे। जासूस वापस आये और उनमें से अधिकांश ने, कालेब और जोशुआ को छोड़कर, कहा, "ऐसा कोई रास्ता नहीं है जिससे हम ऐसा कर सकें। ये लोग हमारे लिए बहुत शक्तिशाली हैं। और यहोवा उन पर क्रोधित हुआ, और इसलिये उस ने कहा, इस पीढ़ी के लोग जो विश्वास नहीं करेंगे, और मुझ पर विश्वास नहीं करेंगे कि मैं तुम्हें कनान देश में ले आऊंगा, वह जंगल में मर जाएगा। 20 वर्ष से कम उम्र की पीढ़ी बड़ी होगी और अंततः वे ही कनान देश में प्रवेश करेंगे।

इसलिए संख्या 13 और 14 अगली महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं, जब तक कि आप संख्या 15 से 20 तक नहीं पहुँच जाते, जो 38 वर्षों की भटकन है। दूसरे शब्दों में, इसके केवल छह अध्याय ही उस 38 वर्ष की अवधि के बारे में बताते हैं। यह उस लंबी अवधि का काफी संक्षिप्त वर्णन है। हम कैसे जानते हैं कि अध्याय 20 भटकने की अवधि का अंत है? क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि संख्या 20:1 से 36:13 तक निर्गमन के बाद चालीसवें वर्ष से पहले का अंतिम वर्ष है। उसका आधार क्या है? संख्या 20:1 देखें। हम पढ़ते हैं, "पहले महीने में, इस्राएल की सारी मण्डली जिन मरुभूमि में पहुँची, और वे कादेश में ठहरे। वहाँ मिरियम की

मृत्यु हो गई और उसे दफनाया गया।” अब, संख्या 20:1 के साथ समस्या यह है कि यह “पहले महीने में” कहता है, लेकिन यह नहीं बताता कि कौन सा वर्ष है। हम एक मिनट में उस पर वापस आने वाले हैं। पहले महीने में, वे ज़िन के रेगिस्तान में पहुंचे और कादेश में रुके, मरियम मर गई और उसे दफनाया गया। यदि आप अध्याय 20 में और नीचे जाते हैं, तो आप श्लोक 22 में हारून की मृत्यु के बारे में पढ़ते हैं। आप देखिए, वे पहुंचे, वे कादेश में रुके, श्लोक 22 कहता है, “पूरा इस्राएली समुदाय कादेश से निकलकर होर पर्वत पर आया। एदोम की सीमा के पास होर पर्वत पर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, हारून अपने लोगों में जा मिलेगा, और वह उस देश में प्रवेश न करने पाएगा जो मैं इस्राएलियों को दूंगा, क्योंकि तुम दोनों ने मेरी आज्ञा के विरुद्ध बलवा किया है। मेरिबा का जल.” आपने श्लोक 28 में पढ़ा, “हारून वहीं पहाड़ की चोटी पर मर गया।

तब मूसा और एलीआजर पहाड़ से उतरे, और जब सारी मण्डली को मालूम हुआ कि हारून मर गया, तो इस्राएल का सारा घराना उसके लिये तीस दिन तक विलाप करता रहा। इसलिए यदि आप संख्या 20:1-29 से जहां हारून की मृत्यु हो जाती है, संख्या 33:36 और उसके बाद, संख्या 33 एक अध्याय है जो उन सभी स्थानों की एक सूची है जहां इज़राइल जंगल में घूमते समय रुके थे। और जब आप उस सूची में पद 36 पर पहुँचते हैं, तो आप पढ़ते हैं, “उन्होंने एस्योन गेबर को छोड़ दिया, और सीन के रेगिस्तान में कादेश में डेरा डाला।” अब संख्या 33:36 की तुलना 20:1 से करें। “पहले महीने में, इस्राएल का पूरा समुदाय ज़िन के रेगिस्तान में आया। वे कादेश में रुके।” देखो, वहाँ ज़िन और कादेश का मरुस्थल है। और फिर श्लोक 37 में, आपने पढ़ा कि, “उन्होंने कादेश छोड़ दिया, और होर पर्वत पर आये।” यह 20:22 के समान है, “इस्राएल का सारा समुदाय कादेश से निकलकर होर पर्वत पर आया;” और यह होर पर्वत पर है जहां हारून की मृत्यु हुई थी। तो आपने अध्याय 33 श्लोक 37 में पढ़ा, “वे कादेश छोड़कर एदोम की सीमा पर होर पर्वत पर आए। यहोवा के आदेश पर, हारून याजक होर पर्वत पर गया, जहाँ उसकी मृत्यु हो गई,” और फिर एक तारीख, “इस्राएलियों के मिस्र से निकलने के बाद चालीसवें वर्ष के पांचवें महीने के पहले दिन को।” तो यह इंगित करता है कि अध्याय 20

चालीसवें वर्ष में शुरू होता है। देखिए आप अध्याय 20, श्लोक 1 पर वापस जाएँ, "पहले महीने में, वे ज़िन के रेगिस्तान में आते हैं।" किस वर्ष का पहला महीना? क्या वह चालीसवाँ वर्ष था? क्योंकि वहीं मरियम की मृत्यु हुई, और जहां हारून की मृत्यु हुई। तो, यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि 20:1 से 36:13 तक आपके पास पिछले वर्ष से संबंधित सामग्री है; चालीसवाँ वर्ष। इसलिए मुझे लगता है कि इससे मदद मिलती है, यदि आप इस कालक्रम का पता लगाते हैं, तो यह आपको पुस्तक के लिए एक संरचना प्रदान करता है। अध्याय 15 से 20 वास्तव में उस 38-वर्ष की अवधि का बड़ा हिस्सा है। पहले 10 अध्याय इज़राइल सिनाई में है। और 13 से 14 वे कादेश में हैं; और 15 से 20 38 वर्षों तक जंगल में भटकना है, और उसके बाद, चालीसवें वर्ष पर ध्यान केंद्रित करना है क्योंकि वे खुद को वादा किए गए देश में प्रवेश करने की स्थिति में रखते हैं।

बी। युद्ध करने वालों को क्रमांकित किया गया है और पद दिए गए हैं - संख्या। 1:1 से 2:24 तक

आइए बी पर चलते हैं, "युद्ध करने वालों को गिना जाता है और पद दिए जाते हैं - 1:1 से 2:24 तक।" प्रभु ने मूसा से एक सूची लेने के लिए कहा, और इसमें 20 वर्ष और उससे अधिक उम्र के सभी पुरुषों की गिनती शामिल थी जो बाहर जाकर लड़ने में सक्षम थे। आपने इसे संख्या 1:2 और 3 में पढ़ा, जहाँ प्रभु कहते हैं, "पूरे इस्राएल समुदाय की उनके कुलों और परिवारों के अनुसार जनगणना करो, और एक-एक करके प्रत्येक व्यक्ति की नाम सहित सूची बनाओ। तू और हारून इस्राएल में बीस वर्ष या उस से अधिक आयु के जितने पुरुष सेना में काम करने के योग्य हों, उनको उनके दल के अनुसार गिनें। अध्याय 1 के शेष भाग में बताया गया है कि प्रत्येक जनजाति में ऐसे कितने लड़ाकू पुरुष थे।

1) जनगणना संख्याएँ

जब आप अध्याय 1 श्लोक 46 पर आते हैं तो आपको कुल मिलता है, जहाँ प्रत्येक जनजाति की संख्या जोड़ी जाती है, और आप पढ़ते हैं कि कुल संख्या 603,550 थी। इसी

तरह की जनगणना पुस्तक के अंत में, अध्याय 26 में ली गई है, और यदि आप वहां देखें, श्लोक 51 में, वहां कुल संख्या 601,730 थी। तो यह लगभग वही है लेकिन कुछ कम है। लेकिन उस 38 साल की अवधि में, एक पूरी पीढ़ी मर गई, दूसरी पीढ़ी ने उनकी जगह ले ली। 600,000 20 या उससे अधिक उम्र के लड़ाकू पुरुषों की एक पूर्ण संख्या है।

अब, यदि आप इसका निष्कर्ष निकालते हैं, यदि 20 या उससे अधिक उम्र के 600,000 पुरुष हैं, तो आपके पास 20 से कम उम्र के पुरुष हैं, और आपके पास महिलाएं भी हैं। तो निर्गमन के समय इज़राइल की कुल जनसंख्या, आप संभवतः 600,000 को तीन से गुणा करेंगे। इसलिए यदि आप तीन से गुणा कर रहे हैं, तो आप 1,800,000 की कुल जनसंख्या, लगभग 20 लाख लोगों की बात कर रहे हैं। आमतौर पर इज़राइल की जनसंख्या के लिए दी गई गोल संख्या 2 से 3 मिलियन लोग हैं। और लोगों की उस बड़ी संख्या ने बहुत सारे सवाल उठाए हैं, और न केवल उन लोगों ने जो इस ग्रंथ को इस समय के इतिहास से प्रेरित और भरोसेमंद विवरण के रूप में नहीं देखते हैं।

कितने इस्राएली थे, इस संबंध में कुछ प्रश्न पुराने नियम के पाठ से ही उठते हैं। उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण बार-बार इस आशय की बात कहता है। व्यवस्थाविवरण अध्याय 7 के पहले पद को देखें, “जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उस देश में पहुंचाएगा जिसके अधिकारनों होने को तू जा रहा है, और तेरे आगे से बहुत सी जातियों को निकाल देगा: हित्तियों, गिर्गाशियों, एमोरियों, कनानियों, परिजियों, हिब्वियों, यबूसियों,” फिर अगले वाक्यांश में, “सात राष्ट्र आपसे बड़े और मजबूत!” क्या कनान में सात राष्ट्र इस्राएलियों से बड़े और शक्तिशाली थे, जब इस्राएलियों की संख्या 2 या 30 लाख थी? व्यवस्थाविवरण में इसे कई बार दोहराया गया है। अध्याय 7 पद 17 पर जाएँ, “तुम अपने आप से कह सकते हो, ये राष्ट्र हम से अधिक शक्तिशाली हैं। हम उन्हें कैसे बाहर निकाल सकते हैं?” उनके पास 600,000 लोगों की सेना है? व्यवस्थाविवरण 9:1 पर जाएँ, “हे इस्राएल, सुनो। अब तुम यरदन पार करने पर हो, कि अपने से बड़ी और सामर्थी जातियों के अधिकारी हो जाओ, और जिनके बड़े बड़े नगर हों, उनकी शहरपनाह आकाश तक ऊंची हो। लोग मजबूत और लम्बे हैं।” व्यवस्थाविवरण 11:23, “तब यहोवा उन सब जातियों को तुम्हारे साम्हने से निकाल

देगा, और तुम अपने से बड़ी और सामर्थी जातियोंको उनके अधिकार में कर लोगे।" तो आपके पास ऐसे वाक्यांश हैं। यदि आप निर्गमन 23:29 पर वापस जाएँ, तो आपके पास एक और दिलचस्प कथन है। वहाँ आपने पढ़ा, "यहोवा कनानियों, हितियों और हिब्रियों के विषय में कहता है, 'परन्तु मैं उन्हें एक ही वर्ष में न निकालूंगा, क्योंकि देश उजाड़ हो जाएगा, और जंगली जानवर तुम्हारे लिये बहुत हो जाएंगे।'" यह इस्राएल के जैसा लगता है। जनसंख्या इतनी बड़ी नहीं होगी कि देश का प्रबंधन कर सके और लोगों को नियंत्रण में रख सके। इसलिए प्रभु कहते हैं कि वह उन्हें तुरंत बाहर नहीं निकालेंगे। इसलिए सवाल उठाए गए हैं कि इन जनगणना आंकड़ों को कैसे समझा जाए।

2) ओटी में बड़ी संख्याओं को समझना: 3 दृष्टिकोण क) संख्याएँ शाब्दिक और सटीक हैं

बड़ी संख्याओं की व्याख्या के लिए यहां तीन बुनियादी दृष्टिकोण हैं। मैं उनमें से प्रत्येक के बारे में कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ और फिर बड़े प्रश्न पर वापस आता हूँ। पहला दृष्टिकोण वे हैं जो जनगणना संख्याओं को स्वीकार करते हैं क्योंकि वे हमारी अंग्रेजी बाइबिल में अनुवादित हैं, इस आधार पर कि उन संख्याओं का हमारी अंग्रेजी बाइबिल में अनुवाद किया गया है। यह हिब्रू शब्दों और शब्दों का सबसे स्पष्ट अर्थ है जो मूल पाठ में उपयोग किए गए हैं। यदि आप आपके उद्धरण पृष्ठ 41 को देखें, तो मेरे पास उस दृष्टिकोण के दो प्रतिनिधि हैं। पृष्ठ के नीचे, न्यू बाइबल कमेंटरी में मैकरे, "द बड़ा नंबर में यह जनगणना पास बनाया था ए कठिनाई के लिए कुछ पाठक, WHO पाना यह मुश्किल को विश्वास करना वह राष्ट्र का इजराइल था इसलिए बहुत दौरान इसका मार्च द्वारा जंगल. अभी तक कब हम विचार करना बड़ा परिवार वह थे प्रथागत और लंबाई का समय वह था खर्च किया मिस्र में पहले शुरुआत का जुल्म, मात्रा का बढ़ोतरी है देखा को नहीं होना पर सभी अनुचित. " यदि आप पृष्ठ 44 पर जाएं, तो ईजे यंग भी वही दृष्टिकोण अपनाते हैं। वह कहते हैं, "तीन आपत्तियाँ को इन अध्याय पास गया निर्मित। एक, यदि संख्या का लड़ाई करना पुरुषों था के बारे में 600,000, कुल जनसंख्या, यह है दावा किया, चाहेंगे तब होना के बारे में 2 1/2 दस लाख, और यह चाहेंगे पास गया असंभव के लिए सत्तर परिवार कौन

आया में मिस्र को पास गुणा किया हुआ इस प्रकार तेज़ी से दौरान समय का उनका उत्पीड़न।" उनका कहना है कि इब्रानियों की फलदायीता के कारण यह असंभव नहीं है। "दो, जंगल का सिनाई, यह है दावा किया, सकना नहीं पास निरंतर इसलिए महान ए समूह का लोग।" लेकिन जैसा कि उनका तर्क है, यह भगवान का चमत्कारी हाथ था जिसने उन्हें कायम रखा। "तीन, आदेश मार्च का _ है कहा को होना असंभव।" वह कहते हैं, "लेकिन अगर खाता है इसलिए असंभव, नहीं लेखक चाहेंगे पास तैयार ऐसा एक असंभव योजना। बहुत कठिनाई शामिल है लेकिन एक संकेत का ऐतिहासिकता. तब से इसलिए थोड़ा है कहा के बारे में विवरण का मार्च, हम हैं में नहीं पद को सवाल ऐतिहासिकता और शुद्धता का कथन निर्मित।" इसलिए ऐसे कई इंजील विद्वान हैं जो संख्याओं का समर्थन करते हैं, जैसा कि वे हमारे अंग्रेजी संस्करणों में अनुवादित हैं।

ख) संख्याएँ कृत्रिम रूप से गढ़ी गई और बढ़ा-चढ़ाकर बताई गई हैं

इन नंबरों तक पहुंचने का दूसरा तरीका है। यह एक बहुत ही विशिष्ट, आलोचनात्मक दृष्टिकोण है, जिसमें यह कहा जा सकता है कि जनगणना संख्याओं का कोई मूल्य नहीं है। वे कृत्रिम रूप से गढ़े गए हैं और पूरी तरह से अविश्वसनीय हैं। तर्क यह है कि ये योग बहुत बाद के समय के हैं, ये संख्याएँ अतिरंजित हैं और इनका कोई महत्व नहीं है। एक टिप्पणीकार का कहना है, "उनका कोई सांख्यिकीय मूल्य नहीं है।" इसलिए कुछ लोग उन्हें वैसे ही स्वीकार करते हैं जैसे वे हैं और कुछ कहते हैं कि उनका कोई मूल्य नहीं है।

तीसरी श्रेणी. ऐसे लोग हैं जो हमारे आधुनिक संस्करणों में अनुवादित संख्याओं को स्वीकार नहीं करते हैं, लेकिन मूल पाठ के अर्थ की वैकल्पिक समझ के आधार पर उनके लिए कुछ स्पष्टीकरण खोजने का प्रयास करते हैं। दूसरे शब्दों में, इस दृष्टिकोण के लोगों का कहना है कि मूल पाठ में कुछ ऐसा चल रहा है जिसे हम पूरी तरह से नहीं समझते हैं और जिस तरह से हमारे आधुनिक संस्करणों में उनका अनुवाद किया गया है वह पाठ की मूल भाषा के उचित अनुवाद के अलावा कुछ और दर्शाता है। अब इस दृष्टिकोण के कुछ समर्थक इंजील विद्वान हैं जो पाठ की विश्वसनीयता को स्वीकार करेंगे। यदि आप इस बाद

की श्रेणी में इन संख्याओं की व्याख्या के इतिहास को देखें, तो बहुत पहले फ्लिंडर्स पेट्री नाम के एक व्यक्ति, जो प्राचीन मिस्र के शुरुआती पुरातत्वविदों में से एक था, ने बताया कि हिब्रू शब्द, *एलिफ*, के दो अर्थ हैं। *हाथी का* अनुवाद "हजारों" किया जा सकता है। आपके पास वहां *हाथी है*, इसका बहुवचन है, इसलिए *हाथी का* अक्सर अनुवाद किया जाता है, "हजारों।" लेकिन इसका अनुवाद "आदिवासी समूह" या "कबीले" के रूप में भी किया जा सकता है। न्यायाधीशों 6:15 को देखें। न्यायियों 6:15 में, यह गिदोन की कहानी है। गिदोन ने यहोवा से कहा, मैं इस्राएल को कैसे बचा सकता हूँ? मनश्शे में मेरा कुल सबसे कमजोर है, और मैं अपने परिवार में सबसे छोटा हूँ।" जब गिदोन कहता है, मेरा "कबीला" मनश्शे में सबसे कमजोर है, तो वह *हाथी शब्द है*। किसी प्रकार की जनजातीय उप-इकाई।

यदि आप 1 शमूएल 10:19 पर जाएँ, तो आप वहाँ पढ़ते हैं, "परन्तु अब तू ने अपने परमेश्वर को, जिस ने तुझे तेरी सारी विपत्ति और संकटों से बचाया है, तुच्छ जाना है। और तू ने कहा, 'नहीं, हमारे ऊपर राजा नियुक्त करो।' यह मिस्पा की सभा है। "इसलिये अब तुम अपने अपने कुलों और कुलों के अनुसार यहोवा के साम्हने उपस्थित हो जाओ।" "कुलों" में *हाथी है*, *हाथी का* बहुवचन. तो फ्लिंडर्स पेट्री ने ऐसे ग्रंथों को देखा, जहां *हाथी का* अर्थ "हजार" नहीं था, बल्कि कुछ अन्य अर्थ था, जैसे किसी प्रकार का आदिवासी उप-समूह।

तो उसने उन संख्याओं के साथ क्या किया जो संख्या 1 में दी गई हैं, प्रत्येक जनजाति के लिए, उदाहरण के लिए, श्लोक 35, आइए बस एक चुनें; जहाँ यह लिखा है, "मनश्शे के गोत्र की संख्या 32,200 थी।" यदि आप हिब्रू पाठ को देखें तो वह है 32 *हाथी*, और सैकड़ों के लिए दो *मेओट* / तो वह कहेगा कि *हाथी* तम्बू-समूहों को संदर्भित करता है; मेओट्स एक जनजाति में लड़ने वाले पुरुषों की संख्या को संदर्भित करता है। तो मनश्शे के मामले में, वहाँ 32 तम्बू-समूह, *हाथी होंगे*, और 200 लड़ने वाले आदमी होंगे। तो उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि यदि आप उन सभी को जोड़ दें तो 598 तम्बू-समूह थे, जिनमें 5,550 लड़ने वाले लोग थे। दूसरे शब्दों में, प्रति तम्बू-समूह में लगभग 9.5 लड़ाकू पुरुष। लेकिन उन्होंने स्वीकार किया कि वह वास्तव में सभी संख्याओं को इस तरह से संभाल नहीं सकते हैं, क्योंकि यह वास्तव में श्लोक 46 की व्याख्या नहीं करता है, जहां आपको 603,550 मिलते

हैं। यह उस नंबर के साथ काम नहीं करता। और उदाहरण के लिए, संख्या 3:22 पर, जहां आपके पास एक महीने या उससे अधिक उम्र के सभी पुरुषों की संख्या 7 हाथी और 7 तम्बू-समूह थे, जिनमें 500 थे। दूसरे शब्दों में, अनुपात अनुपात से बाहर लगता है; 7 तम्बू-समूह - 500 पुरुष। तो यह एक ऐसा सुझाव था जिसने वास्तव में बहुत अधिक प्रभाव नहीं डाला।

घ) हाथी → अलुफ़ = सरदार, कप्तान

रेड क्लार्क एक और विचार लेकर आए। उसने वही मूल लिया, *एलेफ़ ने उसे लंगड़ाया*, लेकिन इसे अलग तरीके से इंगित किया, और *एलेफ़ के बजाय* उसने स्वरों को जोड़ते हुए इसे इंगित किया जो इसे *अलुफ़ के रूप में प्रस्तुत करता है* जिसका अर्थ है "प्रमुख" या "कप्तान", ताकि संख्याओं में आप निश्चित हो सकें योद्धाओं को इंगित करने के लिए कप्तानों की संख्या, और फिर संख्या का सैकड़ों भाग।

ई) वेन्हम का - परिवार या कुल उस सिद्धांत का एक अलग, या एक प्रकार का संशोधित रूप, जॉन वेन्हम द्वारा आगे काम किया गया था। उन्होंने टिंडेल बुलेटिन में एक लेख लिखा, जिसका शीर्षक था, "पुराने नियम में बड़ी संख्याएँ।" यदि आप अपने उद्धरण पृष्ठ 42 को देखते हैं, पृष्ठ के नीचे, वेन्हम के लेख, "पुराने नियम की बड़ी संख्या" पर कुछ पैराग्राफ हैं, और आप देखते हैं कि यह शुरू होता है, "बिना हाथी को लेने के विभिन्न तरीके हैं असंभव रूप से बड़ी संख्या में शामिल होना। यह एक सामाजिक इकाई हो सकती है - परिवार, कबीला, तम्बू-समूह या एक सैन्य इकाई... या यह एक अधिकारी या विशेष रूप से प्रशिक्षित योद्धा हो सकता है। और वह एक तरह से उस विचार के साथ चलता है, मैं यह सब नहीं पढ़ना चाहता; यह बहुत जटिल और विस्तृत है। यदि आपकी इसमें रुचि है तो हो सकता है कि आप पूरा लेख प्राप्त करना चाहें और कभी-कभी इसे पढ़ना चाहें। लेकिन पृष्ठ 43 के मध्य भाग पर ध्यान दें। "यह सोचने के कारण हैं कि हजारों के कप्तानों के पास आमतौर पर 7 या 8 *मेओट होते होंगे*। इसी तरह एक औसत *मी आह* की वास्तविक ताकत *सौ* है। वह

मे ओट को एक सैन्य इकाई के रूप में लेता है - "एक औसत मे आह की वास्तविक ताकत लगभग 75 आदमी रही होगी। 75 आदमियों में से साढ़े 235 मे आकुल मिलाकर लगभग 17,662 1/2 आदमी देंगे। यह, 580 हाथियों के साथ, 18,000 से थोड़ा अधिक की कुल युद्ध शक्ति देगा। और फिर वह कहते हैं, "अगर हम महिलाओं को शामिल करने के लिए इसे फिर से दोगुना कर दें, तो हमें पूरे प्रवास के लिए लगभग 72,000 का आंकड़ा मिलेगा।" यही उसकी निचली रेखा है। जब वह इन शब्दों का अनुवाद करता है, तो वह जनसंख्या के लिए 72,000, 18,000 लड़ाकू पुरुषों

के साथ सामने आता है। च) वन्नॉय के विचार - इनमें से कोई भी दृष्टिकोण आश्चर्य करने वाला और कठिन नहीं है

इसलिए इन नंबरों से निपटने के लिए कई प्रयास किए गए। मुझे नहीं लगता कि कोई भी सुझाव पूरी तरह से आश्चर्य करने वाला है। उनमें से कोई भी सभी डेटा में फिट नहीं बैठता। वे विशेष रूप से उस सारांश कथन में फिट नहीं बैठते जो आपको पाठ में मिलता है। मुझे नहीं लगता कि संख्याओं के साथ बताई गई बहुत सारी कठिनाइयां दूर करने योग्य नहीं हैं, हालांकि सिनाई के जंगल में इतने समय तक 2.5 मिलियन लोग कैसे जीवित रह सकते हैं, इसकी साज-सज्जा चौंका देने वाली है। माना, भगवान ने चमत्कारी तरीकों से प्रदान किया। मुझे नहीं लगता कि यह संख्या कोई ऐसी चीज़ थी जो निर्गमन के दौरान यूसुफ के मिस्र में रहने के दौरान, 400 साल की अवधि के दौरान प्राप्त नहीं की जा सकती थी। वे उस सीमा तक बढ़ सकते थे।

मुझे ऐसा लगता है कि समस्या कहां है, और मुझे लगता है कि यहां एक समस्या है, बाइबिल के उन पाठों के साथ है जिन्हें हमने देखा, "सात राष्ट्र आपसे अधिक महान और शक्तिशाली हैं।" और फिर इसके अलावा, हम विजय के समय कनान के शहरों के आकार और जनसंख्या के बारे में क्या जानते हैं। यदि आप शहरों के आकार को देखते हैं, तो जेरिको को चुनें, उदाहरण के लिए, वह पहला शहर जहां उन्होंने कब्ज़ा किया था। आपके अनुसार जेरिको कितना बड़ा था? किसी के पास कोई विचार है? यह एक टीला है और नींव

की दीवारें अभी भी वहीं हैं। यह 7 एकड़ है! दूसरे शब्दों में, यह इस स्कूल की पार्किंग स्थल की संपत्ति के आकार का एक शहर है। हम उसे शहर नहीं कहेंगे! अब वह बेशक एक छोटा शहर था; जेरिको में लगभग 2,500 लोग रहते थे। लाकीश 18 एकड़ का था; गिबोन 16; मेगिदो, 13; और ऐ, 27 एकड़। तो आप बहुत छोटी बस्तियों के बारे में बात कर रहे हैं। जेरिको की जनसंख्या लगभग 2,500 थी।

अपने उद्धरण का पृष्ठ 42 देखें। रोलैंड डेवॉक्स, अपने *जीवन और प्राचीन इज़राइल के संस्थानों में* कहते हैं, “बाइबिल के शहर बड़े नहीं थे। खुदाई से यह देखना आश्चर्यजनक है कि वे कितने छोटे थे। उनमें से अधिकांश को आसानी से ट्राफलगर स्क्वायर में फिट किया जा सकता है, और कुछ शायद ही राष्ट्रीय गैलरी के प्रांगण को भर पाएंगे। एनल्स ऑफ़ टिंगलाथ- पाइल्सर III में 732 में जीते गए गलील के शहरों की एक सूची दी गई है; बंदियों की संख्या 400 और 650 के बीच होती है - और यह राजा पूरी आबादी को निर्वासित कर देता था। वे तब, आज जैसे गाँव थे, और बड़े नहीं थे।” अगला पैराग्राफ, “सामरिया और यरूशलेम के लिए जानकारी के अन्य स्रोत उपलब्ध हैं। सर्गोन द्वितीय का कहना है कि वह सामरिया से 27,290 व्यक्तियों को ले गया था।” अगला पैराग्राफ, “यरूशलेम के लिए, नबूकदनेस्सर के निर्वासन के आंकड़े कठिन हैं... एक उचित अनुमान के अनुसार, हमारे भगवान के समय में शहर में लगभग पच्चीस या तीस हजार निवासी थे। कुछ साल पहले यह सिर्फ दीवारों के भीतर पुराने शहर की आबादी थी, और लगभग उसी जगह पर। पुराने नियम के समय में जनसंख्या बहुत अधिक नहीं हो सकती थी।”

अतः ये शहर छोटे थे। रामसेस द्वितीय और हित्तियों के बीच लड़ाई में हमने हित्ती संधियों के संबंध में और *मिस्र के प्राचीन अभिलेखों में* ब्रेस्टेड के अनुसार, उत्पीड़न के निर्वासन और फिरौन के संबंध में भी बात की, सेनाएं लगभग 20,000 थीं। ओरोन्टेस नदी पर लड़ाई में हित्तियों और मिस्रियों। खैर, अब, यदि हित्तियों और मिस्रियों की सेना 20,000 होती; क्या इस्राएल की सेना 600,000 थी?

इसके अलावा, यदि आप निर्गमन 18 पर वापस जाते हैं, जहां आपको याद है कि जेथ्रो ने मूसा को हजारों, सैकड़ों, पचास और दसियों पर न्यायाधीश बनाने की सलाह दी थी,

यदि इज़राइल में 2 मिलियन लोग होते, तो 2 के लिए कम से कम 600,000 पुरुष होते। लाख लोग। इस बारे में सोचें कि जेथ्रो ने मूसा से क्या करने को कहा था। यदि उसने इसे क्रियान्वित किया जैसा कि कहा गया है कि उसने किया, तो उसे हजारों पर 2,000 शासकों को नियुक्त करना होगा; सैकड़ों में से 20,000 शासक; पचास में से 40,000 शासक; और दहाई के 200,000 शासक। तो उसने 262,000 नियुक्तियाँ की होंगी। फिर तुम सोचो, इन लोगों को नियुक्त करने से पहले, मूसा वह सब काम स्वयं कर रहा था। यह निर्गमन 18 की ओर से 2 मिलियन की आबादी के आधार पर उस प्रणाली को कार्यान्वित करने का एक प्रयास मात्र है जिसके बारे में वहां बात की गई है।

किसी को आश्चर्य होता है, "क्या इन जनगणना आंकड़ों में कुछ ऐसा चल रहा है जो हमें समझ में नहीं आता?" यहीं पर मैं इस पर आने को इच्छुक हूँ। एक लैटिन वाक्यांश है, जिसे "नॉनरिफ्लेक्ट" कहा जाता है, कुछ ऐसा जिस पर आप बोल नहीं सकते, क्योंकि आपके पास कोई ठोस निष्कर्ष निकालने के लिए पर्याप्त सबूत नहीं हैं। मुझे लगता है कि इन जनगणना आंकड़ों पर और अधिक काम करने की जरूरत है। लेकिन अधिक काम करने से भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि मुझे लगता है कि इन नंबरों पर क्या चल रहा है, इस पर अधिक प्रकाश डालने की जरूरत है। मुझे नहीं लगता कि पाठ से निपटने के वर्तमान में सुझाए गए तरीके पर्याप्त हैं। निष्कर्ष:

अधिक कार्य पूरा होने तक

संख्याओं को अज्ञात छोड़ना यदि आप पृष्ठ 41 को देखें, तो पृष्ठ के नीचे की ओर आरके हैरिसन का एक पैराग्राफ है। वह कहते हैं, "कोई नहीं का इन प्रयास को पैमाना नीचे पुराना नियम नंबर है योग्य को खाता संतोषजनक ढंग से के लिए सभी आंकड़े शामिल, और इस तरह सुझाव निर्मित नहीं सकता होना लिया जैसा समान रूप से वैध के लिए प्रयोजनों का व्याख्या। अगर अन्य प्रमाण से पास में पूर्व का सूत्रों का कहना है विषय में नंबर आम तौर पर है का कोई कीमत में यह कनेक्शन, यह चाहेंगे मतलब वह पुराना नियम न्यूमेरिकल संगणना "यहाँ इसका सार है," बाकी ऊपर कुछ आधार का असलियत कौन था

अत्यंत परिचित को प्राचीन, लेकिन कौन है अज्ञात को आधुनिक विद्वान. “मुझे लगता है कि शायद यहाँ यही चल रहा है।

मुझे लगता है कि पाठ में जो कुछ भी कहा गया है, वह विश्वसनीय है। मुझे यकीन नहीं है कि हम वहाँ की भाषा ठीक से समझते हैं। दूसरे शब्दों में, वह *हाथी* इस बिंदु पर सैन्य महत्व का प्रतीत होता है, हजारों या सैकड़ों के लिए कड़ाई से संख्यात्मक प्रकार की तुल्यता के बजाय सैन्य इकाइयों के कमांडर या उस तरह की किसी चीज़ के रूप में। मुझे लगता है कि कुछ ऐसा चल रहा है जिसे हम पूरी तरह से समझ नहीं पा रहे हैं। ऐसा होने पर, यह कहना बहुत मुश्किल है कि यह कितनी है। यह काफी था जिसने मिस्र को चिंतित कर दिया कि वे नियंत्रण के लिए बहुत बड़े होते जा रहे थे। लेकिन दूसरी ओर, यह सोचना अनुचित लगता है कि इज़राइल की सेना 600,000 थी जबकि मिस्र के पास केवल 20,000 की सेना थी। तो पाठ विश्वसनीय है, लेकिन यहां कुछ ऐसा चल रहा है जिसे हमारे सीमित आधुनिक दृष्टिकोण से अच्छी तरह से नहीं समझा जा सकता है।

हयेयोन लिम द्वारा प्रतिलेखित
टेड हिल्लेब्रांट द्वारा रफ संपादित
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन
टेड हिल्लेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया